International Conference – 2025: Developed India @ 2047

Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025

Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

आदिवासी समाज, संस्कृति और पर्यावरण संरक्षण

हेमंत कुमार टोप्पो

सहायक प्राध्यापक, गोस्सनर कॉलेज, रांची

भूमिका

आदिवासी का अर्थ आदि से वास करने वाला,अर्थात वैसा समाज जो सुदूरवर्ती क्षेत्रों में आदि काल से रहते आ रही है। जिनके बीच सभ्यता कम रहती है किन्तु सहयोग की भावना के साथ अपनी विशिष्ट संस्कृति एवं पहचान को बनाए रखती है।

आदिवासी समाज प्राचीन समय से ही प्रकृति के साथ गहरा संबंध बनाए हुए है। उनकी जीवनशैली, परंपराएँ और सांस्कृतिक मान्यताएँ पर्यावरण संरक्षण के मूलभूत सिद्धांतों पर आधारित हैं। वर्तमान समय में जब आधुनिक समाज तेजी से प्राकृतिक संसाधनों का दोहन कर रहा है, आदिवासी समुदायों का पारंपरिक ज्ञान और उनका प्रकृति के प्रति सम्मान पर्यावरण संरक्षण के लिए एक आदर्श उदाहरण प्रस्तुत करता है।

यह लेख आदिवासी समाज की जीवनशैली, उनके पर्यावरण संरक्षण के प्रयासों और आधुनिक युग में उनके योगदान की चर्चा करेगा। साथ ही, यह भी विश्लेषण करेगा कि कैसे आधुनिकरण और औद्योगीकरण ने उनके जीवन और पर्यावरण पर प्रभाव डाला है।

आदिवासी समाज की पारंपरिक जीवनशैली और पर्यावरण संरक्षण

1. प्रकृति के प्रति श्रद्धा और सम्मान

आदिवासी समाजों में प्रकृति को ईश्वर माना जाता है। जंगल, नदियाँ, पहाड़, पशु-पक्षी सभी को देवता के रूप में पूजते हैं। उनके त्योहार, रीति-रिवाज और धार्मिक मान्यताएँ पर्यावरण के संरक्षण को प्राथमिकता देती हैं।

उदाहरण के लिए, उरांव,मुंडा,संथाल,खड़िया, भील, मिज़ो आदि जनजाति अपने पर्वों में प्रकृति पूजन, वृक्षारोपण,जल संरक्षण और पशु संरक्षण को प्रमुख स्थान देते हैं। उनके धार्मिक अनुष्ठानों में प्रकृति के तत्वों की पूजा होती है, जिससे प्राकृतिक संतुलन बनाए रखने में मदद मिलती है।

International Conference – 2025: Developed India @ 2047
Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025
Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

2. प्राकृतिक संसाधनों का सतत उपयोग-

आदिवासी समुदाय केवल उतने ही प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करते हैं जितनी उनकी आवश्यकता होती है। वे जंगलों से लकड़ी, शहद, फल और जड़ी-बूटियाँ लेते हैं लेकिन अंधाधुंध दोहन से बचते हैं। उनके कृषि पद्धतियाँ भी पर्यावरण हितैषी होती हैं, जैसे—

झूम खेती (Shifting Cultivation) – यह खेती का एक पारंपरिक तरीका है जिसमें एक क्षेत्र में थोड़े समय के लिए खेती करने के बाद उसे छोड़ दिया जाता है ताकि वह भूमि फिर से उपजाऊ हो सके।

जीव-जंतु और वनस्पतियों का संरक्षण –

आदिवासी समाजों में शिकार खेलने की प्रथा है किंतु इसके लिए नियम होते हैं, जैसे प्रजनन के मौसम में शिकार न करना या गर्भवती मादा जानवरों को न मारना।इसी तरह पेड़ों की कटाई पर भी विशेष ध्यान दिया जाता है जो सूखा पेड़ या डाली होता है उसी को काटा जाता है और जो संस्कृति में शामिल होता है उसे उतना ही काटा जाता है जितना जरूरत होता है।

3. जल संरक्षण की परंपराएँ-

आदिवासी समुदाय जल को सबसे महत्वपूर्ण संसाधन मानते हैं। वे जल संरक्षण के लिए पारंपरिक तरीके अपनाते हैं, जैसे:

झीलों और तालाबों की सफाई – आदिवासी गांवों में जल स्रोतों की नियमित सफाई होती है।

नदी पूजा और जल देवता – कई जनजातियाँ नदियों को पवित्र मानती हैं और उनमें गंदगी फैलाने से बचती हैं।

बाँध और जलाशय – स्थानीय रूप से छोटे बाँध और तालाब बनाए जाते हैं ताकि वर्षा जल को संचित किया जा सके।

आधुनिकीकरण और आदिवासी समाज पर प्रभाव--

1. जंगलों की कटाई और विस्थापन-

आधुनिक औद्योगीकरण और शहरीकरण के कारण जंगलों की कटाई हो रही है, जिससे आदिवासी समुदायों

International Conference – 2025: Developed India @ 2047
Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025
Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

का पारंपरिक जीवन प्रभावित हुआ है। खनन, बाँध निर्माण और बड़े पैमाने पर वृक्षों की कटाई के कारण उन्हें अपने मूल स्थानों से विस्थापित किया जा रहा है।

2. औद्योगीकरण और जल प्रदूषण-

आदिवासी क्षेत्र अक्सर खनन और फैक्ट्री प्रदूषण से प्रभावित होते हैं। नदियों में फैक्ट्रियों से निकलने वाले रसायन जल को प्रदूषित कर देते हैं, जिससे न केवल मनुष्यों बल्कि जलीय जीवों का भी जीवन संकट में पड़ जाता है।

3. पारंपरिक ज्ञान की उपेक्षा-

आदिवासी समाजों के पास कई ऐसी पारंपरिक ज्ञान प्रणालियाँ हैं जो पर्यावरण संरक्षण में सहायक हो सकती हैं। लेकिन आधुनिक विज्ञान और सरकारी नीतियों में इन्हें नजरअंदाज किया जाता है, जिससे यह ज्ञान धीरे-धीरे समाप्त हो रहा है।

आदिवासी समाज की पर्यावरण संरक्षण में भूमिका--

1. जैव विविधता संरक्षण-

आदिवासी समाज विभिन्न प्रकार की वनस्पतियों और जीवों के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे औषधीय पौधों और दुर्लभ प्रजातियों को पहचानते और बचाते हैं। उदाहरण के लिए लगभग सभी जनजाति ने अपनी संस्कृति मे सखुआ पेड को शामिल किया है।जिसे जलावन के नाम से कच्ची लकड़ी को काटना वर्जित रहता है। इसी तरह शिकार खेलते समय कुछ ही जानवरों को मारा जाता है।

2. जलवायु परिवर्तन से निपटने में योगदान-

जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए आदिवासी समुदायों की पारंपरिक कृषि पद्धतियाँ और जल संरक्षण तकनीकें बेहद उपयोगी साबित हो सकती हैं। उदाहरण के लिए, हमारे झारखंड के संथाल, मुंडा, उरांव आदि जनजाति ने "तालाब प्रणाली" विकसित की है, जिससे वर्षा जल को संचित कर सूखे के समय में उपयोग किया जा सकता है।

International Conference – 2025: Developed India @ 2047
Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025
Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

3. प्राकृतिक आपदाओं से बचाव

आदिवासी समाजों के पास प्राकृतिक आपदाओं से निपटने के पारंपरिक तरीके होते हैं। वे मौसम के बदलावों को समझने में सक्षम होते हैं और बाढ़, सूखा या भूकंप जैसी आपदाओं के बारे में सरहुल पर्व या अन्य अवसरों पर भविष्यवाणी होती है, इससे निपटने के लिए पहले से तैयार रहते हैं।

सरकार और समाज की भूमिका-

1. पर्यावरणीय नीतियाँ और कानून

सरकार को आदिवासी समुदायों की पारंपरिक पारिस्थितिक ज्ञान प्रणाली को मान्यता देनी चाहिए और उनकी संस्कृति के अनुकूल पर्यावरणीय नीतियाँ बनानी चाहिए।

2. पारंपरिक ज्ञान का संरक्षण-

आदिवासी समाजों की पारंपरिक पर्यावरणीय ज्ञान प्रणाली को लिपिबद्ध किया जाना चाहिए ताकि यह आधुनिक विज्ञान के साथ मिलकर पर्यावरण संरक्षण में योगदान दे सके।

3. आदिवासी अधिकारों की रक्षा-

आदिवासी समाजों को उनकी भूमि और संसाधनों पर अधिकार दिए जाने चाहिए। हालांकि इसके लिए कानून बने हैं, ताकि वे अपनी पारंपरिक विधियों से पर्यावरण की रक्षा कर सकें, किन्तु इसका पालन नहीं हो पा रहा है।

निष्कर्ष-

आदिवासी समाज सदियों से पर्यावरण संरक्षण के अग्रदूत रहे हैं। उनकी जीवनशैली और पारंपरिक ज्ञान प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करने का एक उत्तम उदाहरण प्रस्तुत करता है। हालांकि, आधुनिकरण और औद्योगीकरण के कारण उनके अस्तित्व को खतरा हो रहा है। यदि हम पर्यावरण संरक्षण को गंभीरता से लेना चाहते हैं, तो हमें आदिवासी समाजों के ज्ञान और परंपराओं को सम्मान देना होगा।

सरकार, वैज्ञानिक समुदाय और आम जनता को मिलकर आदिवासी समाजों की पर्यावरण संरक्षण में